

नन्दीपति गीतिमाला

१

गौरी-पूजा

गिरिजा पूज्य चलु^१ वाला
देशु अमयवर मदन गोपाला^२
गोमतीक तट^३ लसु^४ फुलवारी
से फुल तोड़ि राजकुमारी
बाटी भरि चानन करपूर^५ तमोल
गौरिहि दय रुक्मिणि^६ कर जोर
पूजिय^७ गिरिजे शुभ यश लेहु
जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु
नन्दीपति मन सुनू^८ सेआनि^९
देशु^{१०} अमयवर सारंग पानि

मि० गी० सं० (भाग-२, गीत-४)

[१] अन्य पाठ

१. चलु चलु । ४. लसे । ५. कपूर । ६. रुक्मिनि । ७. पूजिय । ८. सुनह ।

९. सयानि । १०. देहु ।

अन्य पाठ सँ

१. 'गोपाल'क स्थान-मे 'गोपाला' । ३. 'तीर'क स्थानमे 'तट' ।

महेशवानी

माला गाँथू हे गोरी
 बम्भोला के^१ पहिरायव^२ माला गाँथू हे गोरी ।
 नहि घर हम सुत चरसा काटल नहि बाँटल हम डोरी ।
 पेंच उधार कहाँसँ लायव नहि घर दाम न कोरी ।
 एक सय^३ आठ रुद्र केर माला सौसे^४ सर्पक डोरी ।
 निर्गुण बान्ह गेंठ^५ दस बान्हल नाग फणा के भूरी ।
 माला गाँथि कयल तैयारी लय चनु शिवक दुआरी ।
 पार्वती^६ पति थिकथि दिगम्बर^७ देखि माल मुसकाइ ।
 मनहि^८ नन्दीपति सुनु ए मनाइनि इहो पद थिक निरवाणी ।
 जाति-पाति एको नहि हिनका तीन भुवन के दानो ।
 किशोरी कुमारी, घोवरडीहा

[२] विद्यापतिर शिवगीत : पृ० १५-१६, गीत २५ क पाठान्तर

१. के । २. पहिरायन । ३. सौ । ४. सजसे । ५. बान्ह गेंठ । ६. बान्हल ।
 ७. फेंचके । ८. दुआरी । ९. पारवती । १०. थिका शिवशङ्कर । ११. 'मनहि'
 विद्यापति । तथा पाद टिप्पणीमे देख गेल अछि 'मनहि' नन्दीपति इति पाठान्तर ।
 हमरा अपना मायसँ ई गीत निम्नरूपमे भेटल :—

माला गाँथू हे गोरी

शिवशङ्कर के पहिरायोन माला गाँथू हे गोरी
 ने हम चरसा तुर सुत काटल ने हम बाँटल डोरी
 किनका घर हम पेंच लय जायव ने अछि दाम ने कोरी
 एक सय आठ रुद्र (मुंड) के माला सौसे सर्पक डोरी
 निर्गुण ब्रह्मा गेंठ ने देखि नाग चेष के भूरी
 माला गाँथि तैयार हम केलहुँ लय पहुँचावथि गोरी
 जाति-पाति एको नहि बूझल सगर नगर बलि ऐली

उचिती

बड़ उँच हेमत पहाड़ रे
 निकसल निरमल धार रे
 तनिकहु गंगा नाम रे
 जनिक न पावः उपाम रे
 पुरुखक एहने३ वानि रे
 सेवल से हम जानि रे
 से की होथि कठोर रे
 तम नहि करथि उजोर रे
 कह कोविद अवधारि रे
 सुपुरुख करथि५ विचारि रे

दादजी, खोजपुर दरभंगा

[३] पाठान्तर : स्व० महेश्वरठाकुर, भीठ भगवानपुर, दरभंगा ।

१. निकसल । २. पाखिब । ३. एहन । ४. हुनि सेवल हम । ५. अनेक ठाम
 सातम आठम पदक अभाव भेटैछ । ६. कहथि ।

उचिती

हम अबला अज्ञानि रे^१
 ससिक^२ सेवल हम^३ जानि रे
 आज हमर बड़ भाग रे
 एहन परस मनि पाव रे
 डेडि बुरल^४ मझधार रे
 लय^५ जहाज करु पार रे
 सात खण्ड^६ कुसिआर रे
 निकसल^७ प्रेम पिआर रे
 कह 'बादरि' अवधारि रे
 गुनमन्त जग^८ दुइ चारि रे

बुचनीदाइ, नवानी, दरभंगा

[४] मि० गी० सं० (भाग-१, गीत-५२), मि० म० (गीत ८७३)क पाठान्तर :--
 [४] १. निरजनि। २. शशि। ३. गुण। ४. डुवल (मि०म० डेलि डुवल)।
 ५. लै।

विशेष :: केवल चारि पंक्ति, प्रथम, दोसर, पांचम ओ. छठम समान छैक। तेसर, चारिम तथा अन्तिम चारि पंक्ति नहि छैक। एकरा बदलामे तेसर-चारिमक बदलामे छैक--

हम सौं अनेक कुरीति रे
 सुपुरुष ने तेजै चिरीति रे

भनिता मे छैक--

भनहि विद्यापति मान रे
 सुपुरुष बसथि सुठाम रे

मि० गी० सं० (भाग-३, गीत-१४), मि० म० (गीत-६१८) मे एहि गीतक पांचम छठम भेटैत छैक जाहिमे 'निकसल'क स्थानमे 'निकसय' छैक।

अन्य पाठान्तर

४. उपमा पाहुन पाव रे। ७. रस खण्डित। ८. निकसय। ९. जन।

उचिती

जँओं करु सुजन सिनेह रे

उपमा पाहुन नेह रे

हेम कर मण्डप हेम रे : मनि कादव लपटाए रे
 चानन वन कत नीम रे : तैआने तकर गुन जाए रे
 काग कोइली एक बाँति रे : अलि काँ कुसुम अनेक रे
 भेम्ह ममर एक काँति रे : मालति कै अलि एक रे
 हेम हरदि कत वीच रे : कह 'वादरि' अवधारि रे
 गुनहि चिन्ही उच नीच रे : सुपुरुष जन दुइ चारि रे

दाइजी, लोजपुर, दरभंगा

[१] i मि० गी० सं० (भाग-३, गीत-१३) क पाठान्तर :—

५. काक । ६. काँति । ८. दुइ । ९. बाँति । १०. हिणु । १२. चिन्हल ।
 १३. उच । १४. मणि । १६. तनिक । १८. के । १९. के ।

विशेष :—पाँचम-छठम पंक्ति अन्तिम दुइ पंक्ति सँ पूर्व छैक ।

ii H. M. L. (Vol. I 422) क पाठान्तर :— गजहरा-हस्तलेखसँ ई गीत
 उद्धृत कयल गेल अछि । जाहिमे प्रथम चारि पंक्तिक अभाव छैक ।

११. कर । २०. वादरि कवि अवधारी ।

iii प्रियर्सनक पाठान्तर :—

४. प्रथम चारि पंक्तिक स्थानपर निम्नलिखित पंक्ति छैक :—

बड जन जकर पीरीति रे

कोपहु न तजय सेति रे

एगारहम-बारहम पंक्ति छेक नहि । २१. मणिता मे विद्यापतिक नामयुक्त निम्नलिखित
 दुइ पंक्ति छैक—

विद्यापति अवधान रे

सुपुरुष न कर निदान रे

शेष छी पंक्तिक पाठान्तर निम्नलिखित अछि—

५. काक । ६. बाँति । ७. भेम । ९. बाँति । १२. वृत्ति । १३. उच ।
 १५. तै कि । १६. तनिक ।

उचिती

प्रथम समागम मेल रे

हठहि रइनि^१ चिति^२ गेल रे

नव तन^३ नव अनुराग रे : आव^४ ने जिउव^५ विनु कन्त रे
 विनु परिचय^६ रस जाग^७ रे : विरहे जीवक^८ अन्त रे
 से सम^९ पिय^{१०} तजि गेल रे : नन्दीपति कवि भान रे^{११}
 जौवन^{१२} उपगत मेल रे : सुपुरुष ने करय निदान रे^{१३}

मिथिला देवी, उसमा मठ, दरभंगा

मन्तव्य :—प्रियसनक पद संख्या-४२ क अनुसरण करैत नगेन्द्रनाथगुप्त एहि पदकेँ
 विद्यापतिक पद मानि ५०८ संख्यक पद रूपमे रखलनि । श्रीविमान
 विहारी मजुमदार 'मैथिल-पोथी सँ प्राप्त पद' खण्डक अन्तर्गत उपर्युक्त
 दुहु महानुभावक अनुसरण करैत अविकल रूपमे एहि पदकेँ पद संख्या
 ४६५ मे स्थान देलनि ।

iv अन्य पाठ :—

१. अनुपम । २. हेमहि । ३. की । १९. की । २२. सुपुरुष करवि विचारि रे ।

[६] i. सि० गी० स० (भाग-३, गीत-२६)क पाठान्तर :—

१. रैन । २. चिति । ३. तव तन । ४. परिच । ५. से सम संग । ७. पिये ।
 ८. यौवन । ११. आव की जीवन भेल ।

ii. मै० लो० गी० (पृ० २५७)क पाठान्तर :—

१. रैन । ५. से सब संग । ८. यौवन । ११. आव की जीवन भेल ।

iii. प्रियसन (पद संख्या-७१)क पाठान्तर :—

माँग सँसव पहु अज जीयब विरहे जीव भेल

भनइ विद्यापति भान रे सुपुरुष गुनक निधान रे

नगेन्द्रनाथ गुप्त पदसंख्या ६६३ मे तथा विमान विहारी मजुमदार पद संख्या ५०६ मे
 एकरा विद्यापतिक नाम पर रखने छथि ।

तिरहुति

सुन्दरि चललि शयन गृहि ना । रोय रोय कलरा दहल गेल ना ।
 दश पाँच सखि सब कर घर ना । अदंकहि सिंदुरमेढाय गेल ना ।
 जाइतहि लागु परम डर ना । नन्दीपति कवि आव ना ।
 जैसे शशि काप राहु डर ना । देख सहल सुख पाओल ना ।
 हार टुटि छिरियाय गेल ना । (दुख सहिष सुख आव ना)
 भूपण बसन लोटाय गेल ना ।

मिथिला-देवी, उसमा-जट, दरमंगा

[७] i (म० गी० सू० (भाग-३, गीत-३०)क पाठान्तर :-

२. चहु बिश । ४. जैसे जगि कापे वा 'शसि यत कापि' । ९. अदंकहि ।
 ११. मान ।

ii सै० ली० गी० (पृ० २४४)क पाठान्तर :-

१. चललिह पटु घर ना । २. हँसि हँसि । ६. मलिन । ९. अदंकहि । १२. 'मान
 नाथ' कवि-वीर घर ना ।

iii मियर्सन (गीत संख्या-२६)क पाठान्तर :-

१. जाइतहु पटु घर ना । २. चहु बिश । ३. जाइतहु लागु परम । ५. जाइतहि
 हार टुटि गेल ना । ६. मलिन । ८. रोए रोए कावर बहाए देल ना । ९. अदंकहि ।
 १०. देल । १२. मनइ विद्यापति पाओल ना । १३. दुख सहि सहि ।

विशेष :- नगेन्द्र नाथ गुप्त अपन विद्यापति प्रभावजीमे पद संख्या १४७ रूपमे
 संकलित कय लेखनि, विमानविहारी मजुसदार एहि पदके मिथिलासे
 प्राप्त सन्दिग्ध पदक रूपमे पद संख्या ८९६ मे संकलित कयलनि, तथा
 नन्दीपतिक गीत द्वीयवाक सम्बद्ध कयलनि ।

iv दाइजी, खोजपुरक पाठान्तर :-

२. चौधस सखि । ३. प्रेम । १०. मलिन भेल । ५. छुबितहि हार टुटि गेल ना ।
 ७. छुबितहि बसन हेरा गेल ना । १२. 'बुद्धिनाथ' कवि पाओल ना । १४. दुख छाहि
 सुख पाओल ना ।

विशेष :- चारिम ऐतिह्यक बाद सप्तम-आठम पक्ति छैक । गीतक पोथीमे 'बुद्धि
 नाथ' भणित छलैक किन्तु नाथवा कालमे 'बुद्धिनाथ' नाम भाषासमे
 छलैक ।

तिरहुति

चललि शयन वर^१ सुन्दरि रे आनन अरविन्दा^२
 शिर सँ^३ ससरल घोषट रे जनि^४ उगल चन्दा
 चलइत नूपुर कङ्कण^५ रे दुहु स्व एक काले^६
 दुर सँ हंस सवद सुनि^७ रे जनि बोल मराले^८
 नाभि विवर सँ निकसल^९ रे रोमावलि सापे
 से सौतिन वध कारक^{१०} रे आँचर धर^{११} भाँपे
 उड़हु न जान चकवा^{१२} रे दुहु कुच उर^{१३} छाजे
 पवन परस उर अश्वल^{१४} रे जनि भपटल बाजे
 नव परिचय नव कामिनि^{१५} रे भूषण^{१६} अनुरागे
 कह अनुभव कवि^{१७} वादरि रे सुनइत^{१८} सुख लागे

मै० गी० १०, १०, ३२, गीत-५६

[न] विशेष:- मै० गी० १० मे निधि उपाध्यायक (जे जोरखन भाक नामान्तर कहल जाइछ) रचना कहल गेल अछि। यद्यपि भणितामे 'वादरि' छैक । टिप्पणी (१० १२१)मे उज्जानक बदरीनाथ उपाध्यायक पूर्वज 'निधि' छलाह सेहो संभावना कयल गेल अछि ।

i मि० गी० सं० (भाग-३, गीत-४३) क पाठान्तर :-

१. गृहि । २. आनन्द उरवृन्दा । ३. सौं । ४. जानि । ५. किकिनि । ६. दोरख दुहु काने । ७. दुर सँ हंस शब्द कह । ८. घर पिय जिवशाने । ९. सौं निकसलि । १०. कारल । ११. रह । १२. उरहु न जानि चकवा शिशु । १३. उर कुचयुग । १४. उर आँचर । १५. नागरि । १६. अमिनव । १७. करि । १८. देखैत बड़ ।

विशेष:- पाँचम-छठम पंक्ति सातम-आठम पंक्तिक बाद छैक ।

ii मै० लो० गी० (१० २३६) क पाठान्तर :-

१. गृहि । २. आनन्द-उरवृन्दा । ५. किकिनि । ६. पिक कल अलसाने । ७. हंस शब्द कह । ८. घर पिय जिवशाने । १२. उरहु न जान चकवा-शिशु रे । १३. उर कुच युग उर-आँचर । ९. निकसलि । १०. कारल । ११. रह ।

विशेष:- पाँचम-छठम पंक्ति सातम-आठम पंक्तिक बाद छैक । अन्तिम भणिता युक्त दुहु पाँतीक अभाव छैक ।

६
तिरहुति

ना धरु ना धरु हे कर मोर कन्हई
 हम पर नागरि हे तोँ हे जादवराई
 छीक पड़ल घर हे दधि चललहुँ बीकय
 बाटहि भगड़ भेल हे ज्यों पलटव नीकय
 [दधि-दुध] गोरस बिरस भेल हे नहि लेत गहिकिनिआ
 सासु ननदि घर [दारुन] हे मोरा कहत कहिनिआ
 सखि अगुआइलि हे वन माँझ नड़ाए (ई)
 कि करव कानू (हे) (हम) तोहर बड़ाई
 नन्दीपति कहु (हे सुनु) कुमरकन्हई
 पार कइए दयह एहि-दह हे तोर नन्द दोहाई
 दाइजी, सोजपुर, दरभंगा



विशेष :— ई पद सर्व प्रथम बेर प्रकाशमे आवि रहल अछि ।

१, २, छन्दक अनुरोधे अनपेक्षित अछि । ३, संशोधित । ४, ५, ६, मूलमे ई नहि छेक
 दश छन्दक अनुरोधे अपेक्षित अछि ।

तिरहुति

माधव ई नहि उचित विचारे
 जकर एहन धनि काम कला सनि से किए कर व्यभिचारे
 प्राणहु ताहि अधिक छलि ये धनि हृदयक हार समाने
 को परि आन कओन बिधि ताकिय कि कहव तनिक गेआने
 पढ़ल पुरुष भय मुख्य भेलाहि तोहे सहजहि ई अरविन्दा
 से सिनुआरि कुसुम तेजि सेविय सहजहि भग्दर मलिन्दा (?)
 कृपण काँ कैअओ नै भल कह इ अछि जेग उपहासे
 निय धन अछूत से नहि भोगथि केवल परहिक आसे
 नन्दीपति भनिय रसिक जन की फल अधिक जेनाइ
 माडि आनिय बिच तेँ जँ होय नित अपन करिये कैथिलाइ
 प्राचीन हस्तलेख सँ

[१०] प्रस्तुत पद विद्यापतिक नाम पर पूर्ण प्रचलित अछि। श्रियसन, नगेन्द्रनाथगुप्त तथा विमानविहारीभक्तुमदार विद्यापतिक प्रामाणिक पद मानने छथि, किन्तु हमरा ई नन्दीपतिक भणितामे एक प्राचीन तिरहुता हस्तलेखमे उपयुक्त रूपमे उपलब्ध भेल। ई हस्तलेख सम्प्रति प्रोफेसर डाक्टर जैलेंद्रमोहनझा, मैथिली-विभाग, सी०एम०कालेज, दरभंगाक लगमे सुरक्षित छनि। नीचाँ श्रियसनक पाठ दऽ रहल छी जाहिमे अन्य भिन्न पाठक संग पाँचम-छठम पंक्तिक अभाव छक।

माधव ई नहि उचित विचारे
 जनिक एहन धनि कामकला सनि ने किए कर व्यभिचारे
 प्राणहु ताहि अधिक कय मानय हृदयक हार समाने
 कोन परियुक्ति आन केँ ताकव की थिक हुनक गेआने
 कृपिन पुरुष केँ केथो नहि निक कह जगभरि कर उपहासे
 निज धन अछूत नहि उपभोगव केवल परहिक आसे
 भनहि विद्यापति मुनु मधुरा पति इ थिक अनुचित काजे
 माँगि लायव चित से यदि होय नित अपन करव कोन काजे

श्रियसन,—५१, नगेन्द्रनाथगुप्त—३७७

वि०वि०मधुमदार—३८०



११
तिरहुति

भाषव एहन दिवस मेल मोरा
अपम करम फल हम उप भोगव ताहि दोष कोन तोरा
जाहि नगर चानन हनि चोन्हि अइह आदर कए सोपे
बिसु गुन बुझल अनिक अनदर उचित न तापर कोपे
सगुन पुरुष निरगुन नोनल जौ जीवन जइ के देला
जौ करमी फुल सबहु सराहिए तौ कि कमल गुन मेला
थल गुन आन ठाम परगोसल तैं की तनिक अमेला
भिरिदरि ताहि तिमिर रह तापर रवि महिमा दिन मेला
जनिक सरसमन ताहि कहिए गुन पसु सिसु अबुध न बूझे
नन्दीपति मन तैं देखु दरपन आन्हर काँ की सूझे

T. V. H. I.V.

[११] मै० लो० गी० (पृ० २५६) ओ मि० गी० सं० (भाग-१, गीत-२३) क पाठान्तर

१. भाषव की कहव कुदिवस मोरा । २. कर्म ३. उपभोगल ४. जाहि ५. नहि ६. चीन्हे
७. अइह ८. के रोपे, ९. गुण १०. तनिक ११. तापर उचित न कोपे ।

चारि पंक्ति बाद मै० लो० गी० मे शेष पंक्ति निम्न रूपसे अलि :—

पहुल पुरुष यदि नयन गमाओल तैं नहि करिय अमेला ।
जौ करमी फुल कोन सराहल तैं की कमल गुन मेला ।।
सुधन पुरुष निरगुन जग निन्दल जइके गौरव बूझै ।
नन्दीपति इहो मन दय बूझिय आन्हरके की दरपन सूझै ।।

चारि पंक्ति बाद मि० गी० सं० मे छैक

पहुल पुरुष थल दुल दुइ प्रकाश गमाओल तैं नहि करिय अमेला
जौ करमी फुल कोन सराहल तैं की कमल गुन मेला
सुधन पुरुष निरगुन जग निन्दल जइके जीवन देल
भिरिदर ताहि विवेणी बहु तापर रवि महिमा किद भेल
जनिका कनक परस होय सुझौल पसु सिसु अबुध की बूझै
'नन्दीपति' इहो मन दय बूझिय आन्हरके की दरपन सूझै

बटगवनी

चन्द्र वदनि नवि^१ कामिनि सजनी^२ यामिनि अति अन्हियारि
 सखि सङ्ग चललि केलिघर^३ सजनी कर-पल्लव^४ दिप^५ वारि
 पवन झिकोर^६ जोर बह सजनी तेँ लेल अञ्जल भाँपि
 देखि उरज अति उन्नत^७ सजनी दीप^८ रासि उठ काँपि
 भप भप कए कत काँपए सजनी विलखि धुनए निज माथ^९
 कथि^{१०} लए जनम देल मोर^{११} सजनी चतुरानन विनु^{१२} हाथ
 नन्दीपति कवि गाओल सजनी ई जग थीक कुमान^{१३}
 परस^{१४} उरज अति सुन्दर सजनी 'माधव सिंह' रस जान

कै० ३०

मै० गी० २०, पृ० ४४, गीत—७५

[१२] पाठान्तर :—

मि० गी० सं० (भाग-३, गीत ३७) ओ मै० लो० (पृ० २७३) :—१. नव, २. सजनी मे,
 ३. गृह, ४. पंफज, ५. दीप, ६. झकोर, ७. घर, ८. सुन्दर (उपयुक्त पाठ मै० लो०
 सं०), मै० गी० २०—सुन्दर ९. (मै० गी० २०—तेँ ओ) १०. भप भप करत झुकल फेर
 सजनी मे, माल धुन खिर माथ, ११. देव जनम देल, १२. विन, १३. अन्तिम-उभय
 पंक्ति क अभाव छैक ।

टिप्पणी :—तारादेवी गोनौन, दरभंगा सँ प्राप्त गीतमे अन्तिम दुनु पंक्ति छैक जाहिमे
 माधवसिंहक उल्लेख अछि । किन्तु हमरा सन्देह अछि जे ई गीत रत्नावली-
 एक अनुकृतिमे होअय । गीत रत्नावलीमे ई भनिता कतअसे उपलब्ध भेलनि
 तकर कोनो संकेत कविशेखर जी नहि देने छथि ।

बटगतनी

माडग^१ चांहे चिकुर भर^२ सजनी सहजहि^३ दूवरि देह
 प्रथमहि सुपहु^४ समागम सजनी उपजल^५ अधिक सन्देह^६
 दूरहि^७ सुतलि विमुखभए सजनी विरल वसने^८ मुख भाँपि
 अभिनव केलिक नामहि^९ सजनी नहि नहि कए उठु^{१०} काँपि
 नूपुर कादि नराओल^{११} सजनी हरल वसन अवशेष^{१२}
 भाव भरल नव^{१३} नागर सजनी उनमत भेल विशेष^{१४}
 नयन नोर^{१५} भरि वाजलि सजनी भल^{१६} शपथ^{१७} क निरवाह
 पुरुष न जान नारि दुख^{१८} सजनी केवल निज^{१९} सुख चाह
 आलस अलक बेयाकुल सजनी न रहलि निजवश नारि^{२०}
 अति कौशल पहु परसल^{२१} सजनी एहि अवसर अवधारि^{२२}
 धैरज धए रह सुवदनि ! सजनी इएह उचित एहि ठाम^{२३}
 नन्दीपति विनु साइस सजनी सुखद न होअ परिणाम
 मे० गी० २०, पृ० ४३, गी०-७४

[१३] T. V. H., VI क पाठान्तर :-

३. पहु से ५. सोह ६. दुरने ७. नसन ८. उठि ११. अवशेष १३. अति उनमत भेल देखि
 १६. शपथक १७. नागर न दुख नारि दुख १८. निज १९. दुहु पक्षिक अभाव छैक ।

विशेष :- अन्तिम पुष्पिका निम्न लिखित रूपमे छैक -

नन्दीपति कवि गायोल सजनी रह उचित एहि ठाम ।

साइस तह पुनु लहु बिक सजनी सुखद होयत परि नाम ॥

मि० गी० सं० (भाग-१, गीत १६) क पाठान्तर ;

१. भागहि २. भेल ३. पहुक ४. वादल ५. दुरिभय ७. विरल वसन ८. नामे ९. उठि
 १०. नराओल १३. भेल १४. नीर १५. सपथ अपन १६. छल १७. अति उन्मत्ति १८. भेल
 १९. दुहु पक्षिक अभाव छैक ।

२१. अन्तिम दुहु पक्षिक स्थानमे विद्यापतिक भनिता युक्त निम्न पुद्ग प्रस्ति छैक ।

भागहि विद्यापति गायोल स० नयो जनु नेह अभाव ।

भाव एकर हम को कहब स० जे सुन मे दुख पाव ॥

विशेष :- पाँचम ओ छठम पक्षि मि० गी० सं० मे सातम-आठम केर बाद छैक ।

मन्तव्य- मे० गी० २० केर उपर्युक्त पाठमे-२०, 'परसल' से 'परसल' संशोधित पाठ ।

बटगवनी

की कहु पहु परदेश गेल सजनी मे
 की कहु किछु ने सोहाय
 फूजल केश नीर बहु सजनी मे
 काजर गेल दहाय
 चूड़ी बसन भार भेल सजनी मे
 भेल यौवन अति मार
 आइन मोरा लेखे विजुवन सजनी मे
 मर भेल दिवस अन्हार
 हरि मिनु खेज सन भेल सजनी मे
 गेरुआ मोहि ने सोहाय
 जौ नहि प्रीतम अओताह सजनी मे
 मरव जहर विष स्वाय
 नन्दीपति मन मन दय सजनी मे
 मन जनु करिय उदास
 तकर कतेक अभिलाखन सजनी मे
 देलन्हि बहु विश्वास

मि० गी० सं०, भाग-४, गीत-५

[१४] विशेष :— H.M.L. Vol I.P. 418, f.n. 56 [c] मे कहल गेल अछि जे ई गीत हुनक नाटको मे छनि, किन्तु नाटक मे ई गीत छैक नहि ।

i. म० लो० गी० मे कतिपय पंक्ति सान्ध युक्त गीत छैक :—

एते दिन भँवरा हमर छल सजनी मे
 जाव गेल मोरम देख
 मधुपुर पिकहु लोभाखल सजनी मे
 मोरा किछु कहियो ने गेल

आगन लागण विषम सन सजनी मे
घर भेल विषम अन्हार
फूल केश अमेर भेल सजनी मे
मेरुला मोरो ने सोहाय
आबु पिया नहि आवत सजनी मे
मख जहर विष साय

पृ० २८५-८६, बटगवनी गीतसं०-२१

ii. बरक उदासीक एक गीतसँ साम्ब छैक—

आहि दिन पिया परदेस भेल सजनी मे
आहि दिन किछु ने सोहेल
आखन मोरा लेखै यिजुवन सजनी मे
घर लागे दिवस अन्हार
सूतक मेज अगिन मत सजनी ने
मेरुआ मोहि ने सोहाय
सूजल केश निर भेल सजनी मे
नयन काजर भेल दहाय
पुरुष वचन निकल भेल सजनी मे
सपतक ने परमान

—गाइनि

१. कुपाल दाइ २. कुसुम सुजरी

ग्राम सहोडा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा ।

iii. एकटा आरौ गीत सँ तुलनीय अछि—

एते दिन भमरा हमर छल मे सजनी
आइ भेल सारख देस
मधु पिय भमरा लोभित भेल सजनी मे
मोहि किछु कहियो ने भेल
सिन्दुर चिन्दुल मोहि ने सोहाय
पहु बिनु भुन भेल लाली पछड़िया
मेरुआ मोहि न सोहाय
पुरुषक जाति अपन नहि सजनी मे
मख जहर विष साय

—गाइनि

वतिम सुजरी (संका)

ग्राम सहोडा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा ।

गालरी

चललो^१ मधुपुर^२ साजि रे दधि बेचन वाला
 यमुना निकट तट जाय रे रोकय^३ नन्दलाला
 मुख अंचर^४ पट ओत^५ रे रमति हँसु भामा^६
 पुलकि^७ पुरल तनु देह^८ रे देखि सुन्दर श्यामा
 मुरली अधर विराज रे सुन्दर सुख^९ रासी
 मन मोरा^{१०} हरल गोपाल रे गोकुल के^{११} वासी
 जाय देवन्धि^{१२} उपराग रे यशोदा^{१३} महारानी
 तोरपुत^{१४} हटलोने^{१५} मान रे लटय गालवि(१)रानी^{१६}
 नन्दीपति भन नेह^{१७} रे सुनु गोप गोआरी^{१८}
 तोहि छाड़ि भजहि ने आन रे^{१९} नोखे गिरधारी

दाइजी, सोनपुर, दरभंगा

[१५] मै० गो० २० क पाठान्तर, गांव संख्या-५०

१. चललि २. मधुपुर ३. रोकल ४. अञ्चल ५. ओट ६. दध बिहुँवलि बामा ७. पुलक
 ८. तन नेह ९. मुख १०. मोर ११. केर १२. जाए देव १३. यशोमति १४. तोर पुत
 क स्वामिने 'हरि' १५. तहि १६. लूट माल विरानी १७. गौरीपति कवि भान रे
 १८. कुमारि १९. सब तेजि भजिय मुरारि रे।

विशेष :- छठम पंक्ति क बाद दुइ पंक्ति आरो छैक—

करव ककोन परकार रे सोचए बचवाला ।

पड़ल कुञ्ज बन साँझ रे बेरी मेल काला ॥

भरिखत ने 'गौरीपति' छैक ।

१६

ग्वालरी

जसुमति सुत^१ सुरारी ना
 सखि हे खेलन्हि जमुना घटशरी ना
 चलली दहि^२ दुध बेचय^३ ना
 सखि हे संग दोसर नहि थिक ना
 कत कत कयल निहोर ना
 सखि हे नहि युभ परम कठोर ना
 आयल^४ जमुन^५ जल बाढ़ी ना
 सखि हे भेलहु कदम तर ठाढ़ी ना
 बाट भेटिय^६ गेल कान्ह ना
 सखि हे ओही वृन्दावन माभ ना
 नन्दीपति कवि भान ना
 सखि हे नन्द तनय रस जान ना^७

स्व० महेस्वर ठाकुर,
 भीठ भगवानपुर, दरभंगा

[१६] सि० गी० सं० [चतुर्थ भाग, पृ० ६, गीत-७] क पाठान्तर :—

१. जसुमति सुत २. दधी ३. बेचन ४. आयली ५. जमुना ६. भेटिय ७. भनहि विद्या-
 पति ८. एही प्रकारक वाक्यांशक हेतु देखू कु०के०मा० पृ० १९, २८, ३०, ३९, ४०

अम्बर धैल^१ उतारी
 से लै^२ कदम^३ चढ़ल मुरारी
 अमरन^४ एक बरु लैह^५
 हरि परिघार^६ वसन मोर देह^७
 सबहि^८ सखी घर जाये^९
 हम किये एतेखन विलमाये^{१०}
 हमहि^{११} बुझिय^{१२} तोर भावे
 से मन बासी^{१३} करह हरि आवे^{१४}
 मोरा^{१५} मुख अवइत^{१६} आगी
 नेह करह हरि अतवे री लागी^{१७}
 नन्दीपति कवि गावे^{१८}
 नन्द तनय रस बूझ आवे^{१९}

मि० गी० तं० (भाग-४, गीत-१२)

[१७] कृष्ण केलिमाला (तृतीय अंक, पृ० ३८) क पाठान्तर

१. घएल २. लए ३. कदमतक ४. अमरण ५. लैह ६. परिधान ७. देहे ८. सबहुँ
 ९. पट पाऊँ १०. हमरहि किए एतिलन विलमाऊ ११. हमहुँ १२. बुझिए १३. बासि
 १४. आवे १५. मुझ १६. अवइत १७. तोहउँ करह हरि तन(त) बहि लागी १८. गाबे
 १९. रसमय बूझ भावे ।

विशेष : - १५म-१६म पंक्ति सातम-आठम सँ पूर्वें छैक । छठम पंक्ति बाद निम्न
 लिखित चारिपंक्ति आश्रोरो छैक—

एति कौतुक किए तोही
 कारण कसोन कहह बुझ मोही
 कीए तोहँ पारह मारी
 हुमेन तोहर हरि सरहोज सारी

अन्य पाठान्तर

३. कदमहि ६. परिहृत (पहिरन) १३. बासि १५. मोर १६. आवइ १७. एतवए लागी ।

१८

मान

आव उचित नहि मान ॥ध्रु०॥

एखनुक रीति ३ हम जेहन देखै छी ३ जागल पै ० पचवान ८
कुसुमा ९ रचित सेज दीपक १० देखि धिर नहि रहय ११ गेआन १२
तखनुक धरज धरय न पावि (र) अ १३ सुनि मुनि पिक निक गान
जुड़ि १४ रनि १५ चकमक १६ कर १७ चानिनि १८ एहन समय नहि आन
एहन समय १९ पहु मिलन जेहन थिक २० जकरहि हो २१ से जान
त्रिवलि तरङ्ग शिता शित २२ संगम उरज २३ शम्भु २४ निस्मान २५
आरति पहु २६ प्रतिग्रह २७ मङ्गलछ २८ करु घनि सर्वस दान २९
कुसुम कुसुम कत विलसि विलासिनि ३० अलि मालति करु मधुपान ३१
अपन अपन पहु सबहु ३२ जेमाओल भूपल तोर मेजमान ३३
हम कि कहव सखि तोहे ३४ कमलमुखि अपनहि करु समधान ३५
सञ्चित मदन वेदन अति ३६ दारुण ३७ नन्दीपति ३८ कवि भान

कृष्णकेलि माला तृतीय अङ्क पृ० ६३

[१८] मि० गी० सं० क पाठान्तर

२. ने रमणी (अधिक छेक) ३. अस्तु ४. एहन ५. देखैत ६. कुसुम १०. दीप दीपक
११. रहत १५. रहनि १६. ई शब्द नहि छेक १७. करु १८. चानन १९. एहि अवसर
२०. सुख २१. जकरे होइ २३. उर २५. निम्मान २६. रति २८. मङ्ग छी २९. कर घनि
सर्वसु दान ३१. हरणि हरणि अलि विलसि विलसि घनि करइ अवसर मधुपान ३२. सबहि
३३. जमाओल भूपल तुज यजमान ३५. तन ।

विशेष :—चारिभ ओ एगारहम वक्तिक अंगान छेक । तेसर वक्ति मि० गी० सं० मे
दशम वक्तिक वाद छेक ।

श्रियसेन क पाठान्तर :—

१. मानिनि (आरम्भ होइत छेक) ३-६. रंग एहन तन लगइछ ७. पय ८. पचवान
९ १२. दीप दीपक देखि धिर न रहय जन, दूड करु अपन गेआन १४. जुड़ि १५. रमनि

१८. जानन १९. एहि अक्षर २०. सुख २१. होए २२. सितासित २४. यम्भु २६. पति
२७. परतिग्रह २८. भगइल २९. सरवत दान ३१. रमसि रमसि अलि बिलसि-बिलसि करि
जेकर अवर मधुपान ३३. जेमाओलि भूलल तुअ जजमान ३७ विद्यापति ।

विशेष :—एहमे मि० गी० सं० जकां चारिम ओ एगारहम पंक्तिक अभाव छैक । पाँचम-
छठम पंक्तिक बाद नवम-दसम पंक्ति देल गेल छैक । तेसर पंक्ति आठम पंक्तिक
बाद अपलैंक अछि । भणितामे विद्यापतिक नाम छनि । प्रियसैनक पद संख्या-
५० केर अनुसरण करैत नगेन्द्र नाथ गुप्त पद संख्या ४१२ मे तथा विमान
बिहारी मन्मदार पद संख्या ४८२ मे निस्संकोच भावें विद्यापतिक पद मानि
लेलनि । मि० गी० सं० भाग-१, गीत सं० ५९, पृ० ४० मे स्पष्टतः 'नन्दीपति'
भणित अछि । ईह गीत उपयुक्त रूपमे 'नन्दीपति' भणित सँ युक्त, हुनक
कृष्णकैलि माला नाटकक तृतीय अंक (पृ० ६३) मे राधिकाक मान तोड़बाक
हेतु सखि विशालाक्षीसँ गवाओल गेल अछि । अतः निस्सन्देह ई गीत विद्यापतिक
नहि, नन्दीपतिक थिकनि ।

पाठ शुद्धि :—

१०. छन्दानु रोवें 'दीपक' क बाद दुइ मात्रा अपेक्षित सँ 'दिप' वा 'सिस' देल जा
सकैल १३. 'पाविअ' के 'पारिअ' सेहो पढ़ल जा सकैल २२. सितासित ३०. 'बिलासिनि' के
छन्दानुरोवें 'बिलसि' कऽ देल जाय वा 'अलि' के हटा देल जाय ।

तिरहुति

'कओने अवगुन' पहुँ तेजलन्दि हमरा
 पर रे रमनि रस लुवुधल भमरा
 निज करु निन्द परस निन्द गेल
 निन्दक भरम भेल पहुँ सन्देह
 ओहि अवसर हम उठलहुँ जागी
 हरि हरि कहैत परम दुख भागी
 पिया पिया करैत पयोधर भारी
 कतेक दिन नयन बहत जलधारी
 ककरि रमनि थिकहुँ कहु गो ताही
 देखलहुँ तोर घनि विरह बताही
 कवि वादरि ई थिकनि सन्देह
 जतेक विरह होन्हि ततेक सनेह

दाइजी, खोजपुर, दरभंगा

[१६] कु० के० भा० (अंक-३ पृ० ६६) क पाठान्तर :—

१. की लनि २. दोले ३. (नहि छेक) ४. मोरा ५. भमरा ६. निजकर परसि.....
 (खण्डित) ७. निनक ८. पिआक ९. सन्देह १०. तेहि ११. उठलहुँ जागि १२. भेलहुँ
 १३. भागि १४. हेरि हेरि पीन १५. भारे १६. कत १७. तेजव नयन १८. घारे १९. ककर
 २०. रमनि हम कहिहह ताही २१. देखलि २२. तोहर २३. विकल २४. नन्दीपति कह
 तखनुक नेहा २५. बेहन २६. हो तेहन सिनेहा ।

विशेष :—आठ पंक्तिक बाद चारि पंक्ति आओर छेक :—

उपवन उपगत दक्षिण समीरे
 किदहुँ होएत पुर परसि शरीरे
 मन छल सुपहुँ होएत सुख दाता
 नव परिचय नव विरह विधाता

जसोमति^१ मोर उपरागे । हरिक चरित^२ मोहि^३ बड़ मन्द लागे
जाइत जमुना पथ आजे । वन सँ^४ बाहर भेल जुवराजे^५
आँचर धएलन्हि^६ मोरा । काल्हुक जनमल तोहर किशोरा^७
तखनुक तसु व्यवहारे^८ । आव कि^९ कहव हम अपन कपारे^{१०}
कोर सुतल तोर कान्हे । तेँ जनु बूझह^{११} हरि छुथि नान्हे
एतय^{१२} करथि तन^{१३} पाने । ओतय कटै छुथि तरुनक^{१४} काने
नन्दीपति कवि गाई^{१५} । जननि जसोमति^{१६} नहि पति आई

T. V. H. VI

[२०] कृ० के० मा० (पृ० २६) क पाठान्तर :—

१. जसोमति २. चरित ३. माइ ४. वन सँ ५. यदुराजे ६. धयलन्हि ७. तोर
किशोरा ८. वेवहारे ९. सेकी ११. जानह १२. एतहु १३. तन १४. तरुनक १५. कहहु सखी
गण मन लाई १६. जसोमति

टिप्पणी :—प्रस्तुत सातम-आठम युग्मक पाँती एहिमे पहिल युग्मक पाँतीक बाद
छेक । अन्तिम पाँतीसँ पूर्व एक युग्मक पंक्ति और छेक :—

पूछहु सखी सेआनी, नहि परमान होइत मोर आनी ॥

अन्तमे भनिता युक्त युग्मक पंक्ति छेक :—

नन्दीपति कवि अवधारी, कृष्ण चरित तम छकिल गोबारी ॥

मैथिली पद्य संग्रह (पृ० ३५-३६) क पाठान्तर :—

३. माइ ४. वनसज्जो ५. यदुराजे ७. तोर किशोरा ८. वेवहारे १०. कषाडे
११. जानह १२. एतए १३. तन १४. तरुनक १५. कह को विद मन लाई ।

टिप्पणी —कृष्णकेलि माला जकाँ एहूमे सातम आठम युग्मक पाँती पहिल युग्मक
पंक्तिक बाद छेक । अन्तिम युग्मक पंक्तिसेँ पहिने एहूमे युग्मक पंक्ति
छेक —

पूछहु सकललि आनी । तेहि परमान छेइत मोर आनी ॥

भनितामे 'कोविद' छेक । कृष्णकेलि माला जकाँ अतिरिक्त पंक्ति नहि छेक ।

हरि हे अति आकुल मन मोरा
 कतेक सहव दुख कौतुक तोरा
 एहि जमुना जल कतहु न थाहे
 लए ग्रिमहार पार लए जाहे
 चहुदिस घन बुन्द वरिसए मेहा
 अब कि करव सखि जिवहु सन्देहा
 भौंभरि नाव टुटल करुआरे
 कोन परि उतरव एहो भव पारे
 सब सखि मिलि बैसलि हिया हारी
 विनु पुरुष पथ न चढ़िए नारी
 नन्दीपति जल बीच अपार
 डगमग नैया करु माँझहि धार

T. V. II. V. II

[२१] कु० के० मा० (पृ० ४५) क पाठान्तर :—

दुनूमे लतेक अन्तर छँक जे सौंसे गीते उद्धृत कऽ देव उचित होयत ।

हरि हे अति आकुल मन मोरा ०
 कतेक सहव हमें कौतुक तोरा ॥
 फूटलि नाओ टुटल करुआरे ०
 कोन परि हमें घनि उतरव पारे
 एहि जमुना जल कतहु न थाहे ०
 देव गृमहार पार लए जाहे ॥
 बने बुन्द वारिश वजहु दिशि मेहा ०
 आवें अधिक भेल जीव सन्देहा ॥
 सबहु सखी मिलि हलु हिया हारी ०
 विनु रे पुरुष पथ अनु चहु नारी ॥
 नन्दीपति कज्जोन उपाइ ०
 डगमग नाओ करइ अछि माई ॥

अंगरेजी पोथी

१३. History of Maithili Literature Vol I, 1949 Dr. Jaikant Mishra Tirbhukti Allahabad-2 H. M. L.
१४. History of Tirhut, 1922 Shyam Narayan Singh, M. B. E, Ray Bahadur Press, Calcutta The Baptist Mission
१५. Maithili Chrestomathy 1880 (Journal of the Asiatic Society of Bengal Extra number I) G. A. Grierson, I. C. S. प्रियसन
१६. Proceedings of All India Oriental Conference XII
१७. Twenty-one Vaishnav Hymns, 1884 (Journal of the Asiatic Society of Bengal I) G. A. Grierson, I. C. S. T. V. H.

हिन्दी पोथी

१८. हिन्दी साहित्य और विहार (द्वितीय खण्ड), १९६३ आचार्य शिवपूजनसहाय विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

